Regarding need for enhanced funding for Project Tiger and establishment of Rescue and Rehabilitation Centres to address human-wildlife conflict- laid

डॉ. आनन्द कुमार गोंड (बहराइच) **:** मैं सरकार का ध्यान देश में संचालित प्रोजेक्ट टाइगर की फंडिंग में आई कमी तथा उससे जुड़ी चुनौतियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ । यह परियोजना बाघ संरक्षण के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में लागू है । पिछले कुछ वर्षों में इस परियोजना हेतु आवंटित राशि में कमी दर्ज की गई है और हाल के वर्ष में वार्षिक बजट घटाकर लगभग 100 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जिससे सुरक्षा, निगरानी, पेट्रोलिंग तथा मानववन्यजीव संघर्ष प्रबंधन जैसे कार्य प्रभावित हुए हैं । सरकार के निरंतर प्रयासों के कारण देश में बाघों, तेंदुओं एवं अन्य वन्यजीवों की संख्या बढ़ी है, परंतु उनके आवास (हैबिटेट) का क्षेत्रफल लगभग समान बना हुआ है । इसके कारण अनेक क्षेत्रों में बाघ, मानव बस्तियों में आ रहे हैं और मानववन्यजीव संघर्ष की घटनाएँ बढ़ रही हैं । विशेषकर मेरे संसदीय क्षेत्र बहराइच के कतर्नियाघाट सहित दुधवा टाइगर रिज़र्व तथा तराई क्षेत्र में यह समस्या अधिक गंभीर है । अतः ऐसे बाघों के सुरक्षित पुनर्वास हेतु विशेष रेस्क्यू सेंटर स्थापित किए जाने की आवश्यकता है । अतः मेरा आग्रह है कि सरकार टाइगर प्रोजेक्ट की फंडिंग की पुनः समीक्षा कर आवश्यकतानुसार बजट बढ़ाए, ताकि संरक्षण प्रयास प्रभावी रूप से जारी रह सकें ।